एक पन्ना मेरी डायरी से

रवि प्रताप सिंह



15 मार्च, 2013 शुक्रवार

जब दिन शुरू हुआ तो मुझे इस बात का ज़रा भी आभास नहीं था कि आज इतनी भावनाओं से भरे माहौल से गुज़रना पड़ेगा। एक घटना जिसके लिए मैं पहले से तैयार था और वह होनी ही थी। मैं बात कर रहा हूँ नीलम के जाने की। आज स्कूल में उसका अन्तिम दिन था क्योंकि उसकी शादी होने वाली थी। दूसरी जो बात हुई उसका अन्देशा तो था। एक दिन पहले ही मैंने मोनू सर से इस बात को शेयर किया था। लेकिन मुझे लगता था कि इस घटना के होने में समय लगेगा, शायद एक साल। सुबह स्कूल की शुरुआत हुई। मेरी कक्षा 2 के बच्चों ने नृत्य-गाना प्रस्तुत किया। मनोरंजक प्रश्नोत्तर के बाद कक्षाएँ प्रारम्भ हो गईं। अपनी पहली कक्षा 2 में गणित का पीरियड लेने के बाद मैं कक्षा 3 में गणित का पीरियड लेने के लिए गया। अभी दस मिनट ही बीते थे कि मैंने आदित्य की मम्मी को आते हुए देखा। उनको देखते ही मेरे मन में अचानक से अजीब-से ख़्याल आने लगे। एक डर, जैसा जब हम छोटे थे तब रिज़ल्ट आने से पहले होता था। मैं कमरे से बाहर आया और बरामदे में उनसे मिला। वे कुछ बोल पातीं इससे पहले मैंने कहा, "मैं आपको फ़ोन करने वाला था। दो दिन से आदित्य स्कूल नहीं आ रहा था।" उस समय उन्होंने जो भी कहा, मुझे पता नहीं उसे मेरे कानों ने ठीक से सुना कि नहीं, परन्तु उस बात का सम्प्रेषण मेरे दिमाग़ में नहीं हुआ क्योंकि मेरा मन उस बात के लिए तैयार नहीं था। अचानक ही मन, कान और दिमाग़ पर हावी हो गया था। फिर जब मैंने ध्यान दिया तब मेरे पैर के नीचे से ज़मीन खिसक गई। ऐसा लगा कि अचानक ही किसी ने मुझे हज़ारों फ़ीट गहरी खाई में धकेल दिया हो। बस मुझे एक ही बात समझ आई कि वे आदित्य की टी. सी. के लिए आई थीं। क्योंकि उसके दादाजी नाराज़ थे और उसका एडमिशन हिम क्रिस्चियन अकादमी में करा दिया था। मैंने अपने-आप को सम्भालते हुए उनसे कहा कि मैं शाम को आपको फ़ोन पर बता दूँगा कि टी. सी. कब मिलेगी।

अपनी कक्षा से किसी बच्चे का चले जाना कोई असाधारण बात नहीं थी। एक शिक्षक के जीवन में यह कोई नई बात नहीं होती, और ऐसा पहले भी मेरे साथ कई बार हुआ है। परन्तु कुछ था जिसने इस घटना को इस पेज पर स्थान दिया। न मैं असाधारण था, न आदित्य की मम्मी की फरमाइश। यदि कोई असाधारण है, तो वह है आदित्य और आज उसका ज़िक्र बहुत ज़रूरी है।

कक्षा 2 में पढ़ने वाला आदित्य, 9-10 साल का बच्चा है। स्वास्थ्य ठीक-ठाक, भरा-पूरा चेहरा, ढीली-ढाली पैन्ट, बेअसर-सी बैल्ट, पैन्ट से बाहर आने को आतुर शर्ट, और नाक सिकोड़कर आँखें छोटी करके किसी चीज़ को देखने की आदत। आदित्य हमारी दुनिया में रहते हुए भी अपनी दुनिया में मस्त, कोई ज़्यादा मतलब नहीं जब तक कि हम ख़ुद उसकी दुनिया में दख़ल न दें। एक प्यारी-सी दुनिया है उसकी। उसमें उसकी गाड़ियाँ, सड़कें, ट्रैफिक, पुलिस, आर्मी, हेलीकॉप्टर, मुख्यमंत्री, भारत–पाकिस्तान, दिल्ली, पेट्रोल पम्प, रैली, झण्डा, साइकिल, पुल, सुरंग और न जाने क्या-क्या। स्कूल के अन्दर आने के बाद बैग क्लास के दरवाज़े पर रखता और फिर मैदान के एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ता। कभी किसी गाड़ी का पीछा करता, कभी गाड़ी बैक करता और कभी ट्रैफिक जाम में फँसा हुआ। पूरे स्कूल यहाँ तक कि पूरे फ़ाउण्डेशन में आदित्य अपनी इस बात के लिए जाना जाता था। उसकी पहाड़ के परिवहन की समझ हमें मजबूर कर देती थी आश्चर्यचकित होने पर। मैंने अब तक की अपनी ज़िन्दगी में ऐसा कल्पनाशील बच्चा नहीं देखा था। सोने पर सुहागा उसकी ड्राइंग। एक ए-4 शीट पर हेलीकॉप्टर, ट्रैफिक में फँसी गाड़ियों की कतार, उन्हें सम्भालती ट्रैफिक पुलिस, उसकी अपनी गाड़ी, एम्बुलेंस, साइकिल से स्कूल जाता बच्चा और न जाने क्या-क्या। पेज का एक-एक इंच प्रयोग होता है। सभी जगहों पर उपयुक्त चीज़ और एक तर्क के साथ सभी बातें एक कहानी के रूप में और उस कहानी को सुनाने के लिए हमेशा उत्सुक मेरा–हमारा आदित्य। इस एक साल में जब से मैंने देखा कि उसका रुझान ड्राइंग में है, मैंने उसे पूरा मौक़ा दिया इस काम को करने का। जब-जब उसने ड्राइंग करनी चाही मैंने उसे करने दिया। जब वह कहानी सुनाना चाहता उसे सुनाने दिया। कभी-कभी तो लगता कि शायद मैं आदित्य के लिए काबिल टीचर नहीं हूँ। ड्राइंग के अलावा हर विषय में हमेशा आगे, निर्भीक, सच्चा और ईमानदार। हम तो कहते भी थे कि हमारे लैसन प्लान तो आदित्य ही सफल बनाता है। साल भर में आदित्य से जुड़ी बहुत-सी कहानियाँ हैं। मैं सारी लिखना चाहता हूँ, पर लिखने की अपनी सीमाएँ हैं। अभी कुछ दिन पहले की बात

है। लंच के समय वो भागा-भागा मेरे पास आया। एक हाथ से अपनी पैन्ट सम्भालते और दूसरे हाथ में किसी गाड़ी की टूटी हुई हैडलाइट का फ्रेम लिए हुए, “सर ये लोग मुझसे ये छीन रहे हैं, आप इसे सम्भालकर रख दो।” मैंने उसे धोकर टॉयलेट की छत पर रख दिया और वह तब तक देखता रहा जब तक उसे सन्तुष्टि नहीं हुई कि वह चीज़ सुरक्षित रहेगी। जब पिछली पीटीएम में मेरी उसकी मम्मी से बात हुई तब वह कह रही थीं कि उनका अकेला लड़का है और उन्हें डर है कि कहीं वह पीछे न रह जाए। मैंने पूरी कोशिश उनके बेटे की विशेषता बताई और विषयवार उसकी रिपोर्ट भी दिखाई। अँग्रेज़ी माध्यम और अनुशासन, बच्चे में टीचर के डर को लेकर उनकी सुई अटकी हुई थी।

आज उनकी निर्णायक बात सुनकर मुझे तथाकथित पढ़े-लिखे और समझदार माता-पिता पर तरस भी आता है और ग़ुस्सा भी। और सबसे ज़्यादा दुःख तो मुझे आदित्य के लिए है। हो सकता है जैसे उसके माता-पिता चाहते हैं वैसे करके वे कुछ कर लें, लेकिन जहाँ उसका मन लगता है और जो वह करना चाहता है शायद ही कर पाएगा। एक नायाब कलाकार पिस जाएगा किताबों के बोझ और ज़िन्दगी की जद्दोजहद में। इन सबमें सबसे बड़ा नुक़सान होगा तो एक बच्चे का, जिसमें उसका कोई दोष नहीं है। यही वेदना, दुःख मुझसे सहन नहीं हो रहा है। और मैं इतना बेबस, लाचार हूँ कि कुछ भी नहीं कर पा रहा हूँ। मैंने अपने मेंटर प्रसाद जी से बात की। उन्होंने कहा कि कल उसकी मम्मी को बुलाना। मैं बात करूँगा, आप भी करना। अब मेरी सारी उम्मीदें कल की बात पर टिकी हैं।

16 मार्च, 2013 शनिवार

सुबह 10 बजे आदित्य की मम्मी आईं। मैंने और प्रसाद जी ने बात की, कारण जानने की कोशिश की। अँग्रेज़ी माध्यम न होने की वजह से आदित्य की मम्मी उसे दूसरे स्कूल में डाल रही थीं। मैंने जान-बूझकर आदित्य को भी बुलाया था ताकि मैं एक बार उससे मिल सकूँ। और आख़िरी बार वो मुझे अपनी स्टाइल में मुस्कराते हुए दिखा।

आज इस घटना को बीते हुए चार साल हो गए हैं। उसी गाँव में रहने के कारण कई बार रास्ते में जाते हुए, दुकान पर कुछ सामान लेते हुए आदित्य दिख जाता है लेकिन उसके चेहरे की वह जादुई चमक, विश्वास से भरा हुआ उसका व्यक्तित्व नहीं नज़र आता। ऐसा लगता है कि आदित्य से वह जादुई चीज़ छिन गई है। मैं अपने मन को समझाता हूँ कि ऐसा न हुआ हो तो अच्छा है।

रवि प्रताप सिंह अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी में 2012 से शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। वे प्राथमिक कक्षाओं में सभी विषय पढ़ाते हैं। उनसे ravi.singh@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।